वित्रकारमञ्जूष्ट्र ॥ इप्रथमक्द व नियक्राविः वीर्यम्बेरी । वेस्मान्य व नियक्राविः यमे । प्रयाः प्रभवेत स्रीत्रे स्त्र क्र वह रहते थ्य निकली युग्य गड्माः मुद्दिलक इनी र्गाने मूने मेरु: येवरा: उर्गि दुस्ताभने॥ पार्टाट गाउँधारि ४० मन्डय वासन्य मेल्क्ये वे उत्लंग अम्बेड्रभय हथी केमय भारत्य भ वेस्रवाय वाष्ट्रय पद्मीक्याय नाभिन य महस्रमय मिमराय पस्तावय के सक्य गर्डिश्य गेवित्रय चनुउय प प्रय मनज्य विद्वे रिनेक्सय हिक्श भय राग्याण्य माइएय महमस्रोत्रा य श्री प्रभागम्य त्री गर्य दी भागे देश य बाष्ट्राय विषेषु एय भड्य मधे राष्ट्रय मंद्र न्मः भूष्यन्मः उपरीप स्तित्त स्वेतं ॥ इस्सामाथ्यं मीतिस्ववसक् हार्डिने अभन्त्व गप्रण्डेमसद्भमे निहली भाष्ठा ने केमरीनवल्डीमश्चलियडामहरू मुनारेस्य हे भे ए हुई ए हुई भिर्मा

यम् व्यम्भागे वसुक्यम् ये वने उद्देश

मर्क्ड्य ग इक इयं भन्गानक भकुनः मुसुर्नग 4555 भागक गण्गसुग्न । पुउभी भाउन्त वियभाउक विष्णया भग्भाउकः ग्रीधन्त्र पश्चमालना सभागभू बर्ग्य स्वार्थ भक्ष्म सड्मडी थम्भपर जामध्य भभुसञ्चर्नि TO 可少前。 अन्ते द्वा भक्त भनभूष् गंधुमांनार् भुस्र सङ्च उ नम धण्ल गुड ज्ञमण्डल धाउधाउक भविद्या मू घ रण्याभक कृति-कृद्धः महाल

भन्ने A3650 क्रीक जिस्र भित्र करम माग्य । नम् एति मंड मस् भिमाग्र अयं क्रम्पर्गाम गडेरी। भग मार्पि गुड़ा

क मिनः भभ भारतेन नभ मुख क्रवत्रभाभवग्रु अस्त्रच्या एउ। एवंभेड रिमेड्ड वे प्रभेष असं इया वरः श्यु इत्ता राग्व भसग्य भग्रह स्थाद स्याद स्थाद स्याद स्थाद स्याद स्थाद स्थाद

31.

0

6

गथ्यतः सवरक्षभन् अभी। हित्रभार स्थापित स्थाप "भूव'शिकुडिनिह्सु अध्दूर्भ्डी पानु असम्याण्या अन्दिश लसभेनया एन इन अमे इन्य ग्रिताणभगराभभेरण भिव अभः। दिउपविक्रिसद्भाः स्भा

क्राणभनभावागाचित्रभनाव भद्ध धरे भेभगं क्याविताः। अवग लभ्र अ उर्ग्य हम् बि हव्य विभ्रष्ट्राभंभाउभगार्डो विङ् रः भुकत्रक्रभाग्रहलेल हुउ (भयाम्ण्यः भाषाः भएउम् क्रिने वि भाराका विषेव यनकृति भभाष्ट्रवाक

श्रुः

खगमभ्विमग्रम। निः 1 अ रयके श विरयक भाग वागारगरद्धि उभिस्तिम विभुग भा अवगरेग्ध्रभात इंभाउप । भीनिक स्राउवः माभुवाः रवक्षिभसम्भा अस्ति क्र अन्य भिद्धिकां यग्भा।।॥